वर्ष-6, अंक: 11 जनवरी-जून, 2018

जेएनयू परिसर

इस अंक के कुछ महत्वपूर्ण लेखक :

केदारनाथ सिंह, योगेश भटनागर, गरिमा श्रीवास्तव, दीपक शर्मा, सत्येन्द्र सिंह, पराग पावन, शीतांशु भारती, अंजुलता, सुशांत शर्मा, मोहन पुरी, दर्शिनी प्रिया, अनुराधा पाण्डेय, वेद मित्र शुक्ल, धीरेन्द्र कुमार, सुमित चौधरी, धर्मराज कुमार, अभिषेक सौरभ आदि

Scanned by CamScanner

संरक्षक
डॉ. प्रमोद कुमार
कुलसचिव

संपादक-मंडल

प्रो. सुधीर प्रताप सिंह
प्रो. ओमप्रकाश सिंह
डॉ. शीतल शर्मा
डॉ. मलखान सिंह

संपादकीय सहयोग
सुमेर सिंह
डॉ. शिवम शर्मा

टंकण सहयोग
दीपक कुमार

फोटो
वकील अहमद

संपर्क:
राजभाषा प्रकोष्ठ
प्रशासन भवन
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110067
दूरभाष: 91-11-26704023
ईमेल: hindiunit@mail.jnu.ac.in

संपादन/संचालन: अवैतनिक

संपादकीय/2

महिला दिवस पर विशेष/4
गिरिजा देवी की गायकी : सुशांत शर्मा

धरोहर/8
कृष्णा सोबती: एक मुलाकात : गरिमा श्रीवास्तव

लेखक की दुनिया : कथा/11-25
उस मोड पर... : योगेश भटनागर
आखिर क्यों : मोहन पुरी
क्षितिज पार : दर्शिनी प्रिया

लेखक की दुनिया : कविताएं/26-29
पराग पावन, मिथिलेश कुमारी, वेद मित्र शुक्ल, बेक बेकोव

काव्य सृजन/30-31
केदारनाथ सिंह की कविता : जेएनयू में हिंदी

अनुवाद/32
युन्ना मोरित्स की तीन कविताएँ : शीतांशु भारती

जेएनयूपन/33-37
धीरेन्द्र कुमार, अभिषेक सौरभ, सुमित कुमार चौधरी

लेख/38-48
सत्येन्द्र कुमार, अंजुलता, अनुराधा पाण्डेय

पुस्तक समीक्षा/49
अनुवाद का एक परिचयात्मक अध्ययन : धर्मराज कुमार

स्वास्थ्य/51
बढ़ती उम्र के साथ जीवन प्रबंध का महत्व : दीपक शर्मा

गंगा ढाबा/54
'विद्रोही': जेएनयू की वाचिक परंपरा का कवि :
सुमित चौधरी

गतिविधियाँ/57
सुमेर सिंह, प्रियंका कुमारी, प्रदीप कुमार, गंगा सहाय मीणा

जेएनयू की इस गृह पत्रिका में प्रकाशित विचार स्वयं लेखक के हैं। उनसे विश्वविद्यालय अथवा संपादक-मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

Scanned by CamScanner

मध्यवर्ग के दोहरे मूल्यों तथा मोहभंग की व्याख्या : काशीनाथ सिंह की कहानियाँ

डॉ. अंजुलता

साठोत्तरी कथा साहित्य के दौर में जब शहरी मध्यवर्ग कहानी के केंद्र में आ चुका था, काशीनाथ सिंह की कहानियाँ सबसे पहले गाँव और शहर के निम्न मध्यवर्गीय जीवन का परिचय देती हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जीवन और साठोत्तरी कहानी की अन्य संवेदनाओं को भी उनकी कहानियों में स्पष्ट अभिव्यक्ति मिली है। उनके लेखन ने कहानी की प्रगतिशील परंपरा को लगातार विकसित करने का कार्य किया है। उनकी एक बड़ी विशेषता यह है कि संवेदनात्मक गहराई को हासिल करने के साथ-साथ उन्होंने अपनी राजनैतिक-सामाजिक पक्षधरता को किसी धुँधलके में नहीं रखा। उनकी विचारधारा की पहचान बहुत ही सहज है। काशीनाथ सिंह स्वयं स्वीकार करते हैं कि उनकी राजनैतिक गतिविधियों को वामपंथी और जनवादी विचारों के प्रकाश में पर्याप्त विकसित होने का मौका मिला। यह समय भारतीय जनमानस में बड़े परिवर्तनों के समय के रूप में जाना जाता है। देश में होने वाले राजनैतिक परिवर्तनों का समाज और व्यक्ति के जीवन पर जो प्रभाव पड़ रहा है उसे काशीनाथ सिंह की कहानियाँ सफलतापूर्वक व्यक्त कर रही थीं। ध्यान रखें कि यह मामला एकतरफा नहीं था। वामपंथी राजनीति के बिखराव और दोहरेपन को भी उनकी कहानियाँ बेहतरीन ढंग से उजागर करती हैं।

कहानी, उपन्यास, संस्मरण और आलोचना से इतर काशीनाथ जी ने परिवेश पत्रिका के संपादन के माध्यम से अपने सधी हुई वैचारिकी का भी प्रमाण दिया है। मोहभंग के कारण आदमी की टूटती-बिखरती संवेदना का चित्रण भी काशीनाथ सिंह की कहानियों में बखूबी देखा जा सकता है। विघटित मूल्यों से पैदा होने वाले आक्रोश को भी यह कहानियाँ बखूबी दिखाती हैं। विषम सामाजिक संरचना की कुरूपता, शोषण, अन्याय आदि का अनैतिक स्वरूप इनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इन सब के बीच एक सामान्य इंसान, जिसे आम आदमी कहा जाता है, उसकी समस्याएँ क्या हैं, वह क्या और कैसे सोचता है– इसकी व्याख्या के लिए काशीनाथ सिंह की कहानियाँ हमेशा याद की जाएंगी। मुसई चा, डाकिया, भोला बाबू, सिद्दीकी, सुधीर घोषाल काशीनाथ सिंह की कहानियों के ऐसे ही पात्र हैं। किसी आदर्श की स्थापना करने के बजाय वे यथार्थ और सजीव पात्रों की रचना करते हैं। इनके पात्र किसी विशिष्ट प्रतिभा के धनी नहीं है। वे दुःख और क्षोभ के क्षणों में किसी दार्शनिक शैली का वरण नहीं करते। इनकी कहानियों के पात्र मोहभंग, आपातकाल तथा बाजारवाद को झेलने वाले, अपनी समस्त सीमाओं के साथ सामान्य से दिखने वाले मनुष्य हैं। इन पात्रों में केवल निराशा और हताशा नहीं है, वरन् प्रतिरोध का साहस भी है। काशीनाथ आपातकाल के युग में गंभीरता से लिख रहे थे। भारतीय लोकतंत्र के लिए यह एक नया मोड़ था, जब देश की सरकार ने ही लोकतांत्रिक स्तंभों को नष्ट करने का कार्य किया था। यह बिल्कुल नया परिदृश्य था। संविधान के प्रावधानों से सुरक्षित लोकतांत्रिक अधिकारों को वही छीन रहे थे जिन्हें इसकी रक्षा करनी थी। ऐसे समय में काशीनाथ सिंह जैसे रचनाकार अपनी कहानियों और दूसरी विधाओं में तद्युगीन सरकार की सीमाओं को मुखरता से रेखांकित करते दिखाई देते हैं। आपातकालीन युग में मनुष्य की हताशा और प्रतिरोध को समझने के लिए सबसे पहले हमें इनकी कहानियों की ओर देखना होगा। राजनैतिक संवेदनाएँ इनकी कहानियों के नेपथ्य में मौजूद रहती ही हैं।

इनकी कहानियों में तीन काल कथा, मुसईचा, आखिरी रात, चोट, लाल किले के बाज, जंगल जातकम्, सुख, दलदल, सूचना, सुधीर घोषाल, तथा कविता की नई तारीख आदि विशेष उल्लेख की माँग करती हैं। इन कहानियों में राजनीति के धूमिल होते चरित्र और हमारे प्रतिनिधियों की वैचारिक अस्थिरताओं, शाश्वत जीवन मूल्यों के बिखराव, स्त्री-पुरुष संबंधों में आने वाले बदलावों को सफलता के साथ चित्रित किया गया है। इस दौर के अन्य रचनाकार राजनैतिक परिवर्तनों और उससे प्रभावित अनुभूतियों के आलोक में समाज को वैसे ही नहीं देख पाते जैसे काशीनाथ जी देखते हैं। इसका संबंध राजनीतिक सचेतनता से है जो काशीनाथ जी को हासिल थी। इसी चेतना ने तीन काल कथा कहानी को जन्म दिया जो साठोत्तरी दौर की एक प्रमुख कहानी बनकर उभरती है। यह कहानी न सिर्फ अंतर्वस्तु की दृष्टि से वरन् रूप की दृष्टि से भी बहुत प्रयोगात्मक है। लेखक ने 'आधुनिक' समाज की विसंगतियों को अलग तकनीक से व्यक्त किया है। केवल गोस्वामी ने इस संदर्भ में लिखा है कि काशीनाथ सिंह की तीन काल कथा आजादी के बाद की नौकरशाही के विद्रूप चेहरे को उजागिर करता है। जन

Scanned by CamScanner